बदलते परिप्रेक्ष्य में शिक्षा और शिक्षार्थी

Dr A. k.Pandey

ARTICLE APPEARED IN BAL HANS OF RAJASTHAN PATRIKA, A REPUTED DAILY OF RAJASHTHAN, SEPTEMBER, 2005

'शिक्षा मानव व्यक्तित्व का विकास करने का एक नैतिक प्रयास है।'

यह सर्वविदित है कि भारत को ज्ञान और सभ्यता का आदि गुरू माना जाता है ज्ञान का सर्वप्रथम प्रादुर्भाव भारत में हुआ और तत्पश्चात् भारतवासियों ने ज्ञान के आलोक को फैलाया।

आज बच्चा जब समझने लायक होता है तो उसे स्कूल में प्रवेश दिलाया जाता है प्राथमिक स्तर से शुरू करें तो बच्चे की प्रारम्भिक शिक्षा महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि जिन गुण संस्कारों को वह अपनी अवस्था के प्रारम्भिक काल में ग्रहण करता है वह उस पर अपना अमिट प्रभाव छोड़ते हैं। इस संदर्भ में शिक्षा देने में एक शिक्षक की भूमिका अहम् होती है शिक्षक रूपी कुम्हार अपने शिष्य रूपी घड़े का मनचाहा आकार दे उसके जीवन को सँवार सकता है।

लेकिन अब प्रश्न यह उठता है कि क्या वास्तव में शिक्षा अपने उद्देश्य की पूर्ति करने में सफल हो पा रही है? हम बच्चे की उचित शिक्षा दे पा रहे हैं जो उसका स्वस्थ मानसिक विकास कर सके? क्योंकि आज जो शिक्षा का स्वरूप हमारे सामने है उससे लगता है कि शिक्षा के नाम पर बच्चे पर शारीरिक और मानसिक बोझ का बड़ा सा झोला डाल दिया गया है जिसके तले दबकर वह उसका समुचित विकास अवरूद्ध होता जा रहा है।

प्राचीन शिक्षा का रूप देखे तो पाते हैं कि गुरू शिष्य परम्परा एक पेड़ के नीचे कुछ ही किताबों में पूर्ण हो जाती थी और शिक्षार्थी अपने गुरू से न केवल शिक्षा दे पाता था वरन् व्यवहारिक जीवन को कुशल बनाना भी सीखता था। लेकिन आज के बदलते परिप्रेक्ष्य में देखे तो शिक्षा बच्चों के लिए सिर्फ किताबी ज्ञान बनकर रह गई है।

बच्चे के ऊपर शिक्षक का, पढ़ाई का, विद्यालय का, अभिभावक का इतना दबाव बना रहता है कि वह इस बोझ तले दबकर अपने बचपन को भूलता जा रहा है। किताबी कीड़ा होने के कारण वह वास्तविक जीवन से दूर होता जा रहा है। और हमें यह कदापि अधिकार नहीं कि हम उसमें उसका बचपन छीनें।

आज शिक्षक, विद्यालय और अभिभावक की बच्चों से अत्यधिक अपेक्षाऐं उसे पढ़ाई से विमुख करने का भी एक प्रमुख कारण है क्योंकि पढ़ाई– पढ़ाई और सिर्फ पढ़ाई, इन सबकी आकांक्षाओं के नीचे दबकर वह पढ़ाई से घबराने लगा है। माँ–बाप की पसन्द, इच्छा उनके बच्चें के भविष्य के कैरियर में बाधक बनती जा रही है।

आज हमें आवश्यकता है कि हम बच्चों के बढ़ते हुए बोझ को कम करें, शिक्षा के उचित मूल्य को समझें। शिक्षा का कार्य समाज के लिए स्वस्थ और प्रबुद्ध नागरिक तैयार करने को समझे तथा नैतिक प्रयास के रूप में शिक्षा की संकल्पना का लोकतन्त्र की वृद्धि के महत्व को समझ कर बच्चें को व्यवहारिक बनाने में सहयोग करें।

निष्कर्षतः बच्चें को मनोबल बढ़ाने वाली शिक्षा प्रदान की जाए। उसे प्रारम्भिक वर्षों में वही शिक्षा मिलनी चाहिए जिसकी माता–पिता, शिक्षक, समाज उससे अपेक्षा करते हैं, जैसे–जैसे वह बड़ा हो, उसके सामने विभिन्न मूल्य रखे जाए और वह अपने गुरूजनों के मार्गदर्शन में अपने ढंग से सीख उनसे सामंजस्य स्थापित करने में सक्षम हो सके तथा मानव–विकास की दिशा में अपने कदम को बढ़ा सकें।